(एक विस्तृत सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक एवं समाजशास्त्रीय अध्ययन)

छठ महापर्व : भारतीय लोक आस्था, सूर्योपासना, प्रकृति-संस्कृति और सामाजिक चेतना का बहुआयामी अध्ययन

(पेज 24 का शेष)

उदीयमान सूर्य की पूजा हमें आशा और नवीन आरंभ का संदेश देती है।

यह दर्शन केवल धार्मिक नहीं, बल्कि मानवीय जीवन के लिए भी उपयोगी है।

मनुष्य को सफलता में अहंकार नहीं करना चाहिए और असफलता में निराश नहीं होना चाहिए। प्रत्येक परिस्थिति में संतुलन और धैर्य बनाए रखना चाहिए।

16.4 समर्पण और सामूहिकता

छठ में व्रती व्यक्तिगत संकल्प के साथ सामूहिक जीवन में भाग लेता है।

इससे व्यक्ति और समाज के बीच संबंध मजबूत होते हैं।

इस पर्व का संदेश है कि मनुष्य का कल्याण केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों में नहीं, बल्कि परिवार और समाज के सुख में भी निहित है।

17. छठ पूजा की अन्य भारतीय पर्वों से तुलनात्मक विवेचना

भारतीय संस्कृति में सूर्योपासना से जुड़े अनेक पर्व और धार्मिक परंपराएँ प्रचलित हैं। छठ पूजा की विशिष्टता समझने के लिए उनका तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी है।

पर्व अथवा परंपरा

प्रमुख आराध्य या आधार
प्रमुख विशेषता

छठ पूजा
सूर्यदेव और छठी मइया
अस्त एवं उदित सूर्य को अर्घ्य

मकर संक्रांति
सूर्यदेव
सूर्य के मकर राशि में संक्रमण का उत्सव

रथ सप्तमी
सूर्यदेव
सूर्य के रथ और आरोग्य की उपासना

सूर्य षष्ठी
सूर्यदेव
षष्ठी तिथि पर सूर्योपासना

संक्राति के सूर्य-अर्घ्य
सूर्यदेव
स्नान, दान और सूर्य को जल अर्पण

सूर्यनमस्कार
सूर्य के प्रति योगिक अभिवादन

शारीरिक अभ्यास और आध्यात्मिक अनुशासन

छठ पूजा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें सामूहिक रूप से नदी या जलाशय के किनारे खड़े होकर अस्ताचलगामी और उदीयमान सूर्य दोनों की पूजा की जाती है।

इसके अतिरिक्त चार दिनों की विस्तृत अनुष्ठानिक प्रक्रिया, लोकगीत, बाँस के सूप में प्रसाद और छठी मइया की लोकआराधना इसे विशिष्ट बनाते हैं।

18. आधुनिकता, नगरीकरण और छठ पूजा में परिवर्तन

समय के साथ छठ पूजा के स्वरूप में अनेक परिवर्तन आए हैं।

पहले यह पर्व मुख्यतः ग्रामीण जीवन से जुड़ा हुआ था। गाँवों में नदी, तालाब और पोखर पूजा के प्राकृतिक स्थल होते थे। परिवार के सदस्य सामूहिक रूप से घाटों की सफाई करते थे और पूजा की अधिकांश सामग्री स्थानीय स्तर पर तैयार होती थी।

आज छठ पूजा महानगरों और आधुनिक नगरों में भी व्यापक रूप से मनाई जाती है।

18.1 कृत्रिम जलाशयों का निर्माण

महानगरों में प्राकृतिक जलस्रोतों की कमी के कारण अनेक स्थानों पर अस्थायी जलकुंड और कृत्रिम घाट तैयार किए जाते हैं।

इससे शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को भी पारंपरिक विधि से पूजा करने का अवसर मिलता है।

18.2 संचार माध्यमों की भूमिका

टेलीविजन, रेडियो और इंटरनेट ने छठ पूजा के प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

छठ के गीत अब डिजिटल माध्यमों पर उपलब्ध हैं। विदेशों में रहने वाले लोग भी अपने परिवारों के साथ ऑनलाइन माध्यम से जुड़े रहते हैं।

18.3 सोशल मीडिया और सांस्कृतिक पहचान

सोशल मीडिया के माध्यम से छठ पूजा की तस्वीरें, गीत, वीडियो और धार्मिक संदेश व्यापक रूप से साझा किए जाते हैं।

इससे नई पीढ़ी में पर्व के प्रति रुचि बढ़ी है।

लेकिन कई बार धार्मिक आयोजन प्रदर्शन और प्रतिस्पर्धा का माध्यम भी बन जाते हैं। भव्य सजावट और बाहरी प्रदर्शन के कारण पर्व की मूल भावना पीछे छूट सकती है।

18.4 नई पीढ़ी और लोकपरंपरा

आज की युवा पीढ़ी शिक्षा, रोजगार और आधुनिक जीवनशैली के कारण अपने पारंपरिक परिवेश से दूर होती जा रही है।

ऐसे में छठ पूजा उनके लिए अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने का अवसर बनती है।

परिवार के बुजुर्ग जब नई पीढ़ी को पूजा की विधि, गीतों और परंपराओं के बारे में बताते हैं, तब सांस्कृतिक ज्ञान का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संचार होता है।

यह सांस्कृतिक निरंतरता का महत्त्वपूर्ण उदाहरण है।

19. छठ पूजा के समक्ष वर्तमान चुनौतियाँ

छठ पूजा का व्यापक विस्तार हुआ है, लेकिन इसके सामने कुछ गंभीर चुनौतियाँ भी हैं।

पहली चुनौती ः जल प्रदूषण। अनेक नदियों और तालाबों की स्थिति ऐसी नहीं है कि उनमें बिना जोखिम के धार्मिक स्नान और अनुष्ठान किए जा सकें।

दूसरी चुनौती ः पारंपरिक गीतों का व्यावसायीकरण। आधुनिक संगीत उद्योग में कुछ प्रस्तुतियों के कारण पारंपरिक लोकधुनों और गीतों की मौलिकता प्रभावित हो रही है।

तीसरी चुनौती ः प्लास्टिक और कचरा। घाटों पर प्लास्टिक, पैकेट और कचरा, घाटों पर प्लास्टिक, पैकेट और अन्य अपशिष्ट जमा होने से पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

चौथी चुनौती ः पारंपरिक कारीगरों की उपेक्षा। मशीन से बनी वस्तुओं और सस्ते औद्योगिक उत्पादों के बढ़ते उपयोग से स्थानीय बाँस कारीगरों और छोटे उत्पादकों को कठिनाई होती है।

पाँचवीं चुनौती ः स्वास्थ्य संबंधी जोखिम। कठोर उपवास के कारण कुछ लोगों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

छठी चुनौती ः लोक-भाषाओं का क्षरण। भोजपुरी, मैथिली और मगही के पारंपरिक छठ गीतों के कई रूप धीरे-धीरे कम प्रचलित हो रहे हैं।

इन चुनौतियों का समाधान सामुदायिक सहभागिता, प्रशासनिक सहयोग और सांस्कृतिक जागरूकता से संभव है।



20. छठ पूजा के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए सुझाव

छठ पूजा की सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखने के लिए निम्नलिखित प्रयास किए जाने चाहिए।

पारंपरिक छठ गीतों का लिखित, ध्वनि और दृश्य रूप में संकलन किया जाए।

विभिन्न क्षेत्रों के लोक-गायकों और व्रती महिलाओं के अनुभवों का दस्तावेजीकरण किया जाए।

प्रत्येक नगर और गाँव में स्थायी जलस्रोतों की स्वच्छता सुनिश्चित की जाए।

प्लास्टिक के स्थान पर बाँस, पत्ते, मिट्टी और अन्य पर्यावरण-अनुकूल सामग्री को प्रोत्साहित किया जाए।

स्थानीय बाँस कारीगरों और छोटे व्यापारियों को आर्थिक सहायता दी जाए।

विद्यालयों और महाविद्यालयों में छठ के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पक्ष पर परिचर्चाएँ आयोजित की जाएँ।

छठ पूजा के लोक-गीतों और पारंपरिक संगीत को प्रोत्साहित किया जाए।

व्रत के दौरान स्वास्थ्य सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाई जाए।

घाटों पर प्राथमिक चिकित्सा, स्वच्छ पेयजल और सुरक्षित प्रकाश की व्यवस्था की जाए।

छठ पूजा को केवल किसी एक भाषा या क्षेत्र तक सीमित न मानकर भारतीय लोकसंस्कृति की महत्त्वपूर्ण विरासत के रूप में प्रस्तुत किया जाए।

21. छठ पूजा के अध्ययन में शोध की संभावनाएँ

छठ पूजा एक ऐसा विषय है, जिस पर अनेक विषयों और दृष्टिकोणों से स्वतंत्र शोध किया जा सकता है।

कुछ महत्वपूर्ण शोध-विषय निम्नलिखित हैं—

छठ पूजा का ऐतिहासिक विकास ः वैदिक सूर्योपासना से आधुनिक लोक-पर्व तक।

छठ पूजा और बिहार की लोक-संस्कृति।

छठ पूजा में स्त्री की भूमिका ः धार्मिक अधिकार और सामाजिक नेतृत्व।

छठ के लोक-गीतों में मातृत्व और पारिवारिक संवेदना।

छठ पूजा और पर्यावरण संरक्षण ः धार्मिक आस्था एवं जलस्रोतों का संबंध।

छठ पूजा और प्रवासी भारतीयों की सांस्कृतिक पहचान।

भोजपुरी, मैथिली और मगही छठ गीतों का तुलनात्मक अध्ययन।

छठ पूजा में लोक-विश्वास और पौराणिक आख्यान।

छठ पूजा का आर्थिक प्रभाव ः स्थानीय बाजार और पारंपरिक हस्तकला।

आधुनिक मीडिया में छठ पूजा का बदलता स्वरूप।

छठ पूजा में सामाजिक समरसता और सामुदायिक सहभागिता।

छठ पूजा और लोक-देवी षष्ठी की उपासना परंपरा।

इन विषयों पर क्षेत्रीय सर्वेक्षण, साक्षात्कार, लोक-गीत संकलन और ऐतिहासिक दस्तावेजों के अध्ययन के माध्यम से गंभीर शोध किया जा सकता है।

22. शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का मूल उद्देश्य छठ पूजा को भारतीय लोक आस्था, प्राचीन सूर्योपासना, प्रकृति-संस्कृति और सामाजिक चेतना के व्यापक संदर्भ में समझना है।

इसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

छठ पूजा के ऐतिहासिक उद्भव और विकास का अध्ययन करना।

भारतीय वैदिक एवं पौराणिक परंपरा में सूर्योपासना के महत्व को समझना।

छठी मइया से संबंधित लोक-विश्वासों और धार्मिक मान्यताओं का विश्लेषण करना।

छठ पूजा की चार दिवसीय अनुष्ठानिक प्रक्रिया का सांस्कृतिक एवं दार्शनिक विवेचन करना।

छठ के लोक-गीतों में निहित सामाजिक, पारिवारिक और भावनात्मक चेतना को समझना।

इस पर्व में स्त्री की भूमिका, धार्मिक अधिकार और सांस्कृतिक नेतृत्व का अध्ययन करना।

छठ पूजा और कृषि संस्कृति, पर्यावरण तथा प्राकृतिक संसाधनों के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण करना।

छठ पूजा के माध्यम से विकसित सामाजिक सहयोग और सामुदायिक समरसता का अध्ययन करना। प्रवासी भारतीय समुदायों में छठ पूजा की सांस्कृतिक भूमिका को समझना।

आधुनिकता और वैश्वीकरण के प्रभावों का अध्ययन करते हुए इस पर्व के संरक्षण एवं संवर्धन के उपाय प्रस्तुत करना।

23. शोध-पद्धति

यह अध्ययन मुख्यतः ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और सांस्कृतिक अध्ययन पद्धति पर आधारित है।

इसमें प्राचीन धार्मिक ग्रंथों, पौराणिक आख्यानों, लोक-परंपराओं, प्रकाशित पुस्तकों, शोधपत्रों और सरकारी सांस्कृतिक अभिलेखों को आधार बनाया गया है।

इस विषय पर आगे विस्तृत क्षेत्रीय शोध करने के लिए बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों में प्रत्यक्ष सर्वेक्षण किया जा सकता है।

विशेष रूप से छठ के अवसर पर व्रती महिलाओं, लोक-गायकों, बाँस के कारीगरों, पुजारियों, किसानों और स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ताओं के साक्षात्कार उपयोगी होंगे।

इससे छठ पूजा के धार्मिक स्वरूप के साथ-साथ उसके सामाजिक और आर्थिक पक्ष को भी अधिक प्रमाणिकता के साथ समझा जा सकेगा।

24. उपसंहार

छठ पूजा भारतीय लोक-जीवन की ऐसी अनूठी सांस्कृतिक परंपरा है, जिसमें धर्म, प्रकृति, परिवार, समाज और मानवीय संवेदना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। यह केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि भारतीय समाज की सामूहिक स्मृति, सांस्कृतिक पहचान और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता की जीवंत अभिव्यक्ति है।

पर्व की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें मनुष्य सीधे प्रकृति के सम्मुख उपस्थित होता है। न कोई भव्य मंदिर आवश्यक है, न किसी विशेष स्थान की अनिवार्यता। नदी का किनारा, तालाब का तट, जल का विस्तार और आकाश में दिखाई देता सूर्य ही इसके सबसे बड़े पूजा-स्थल बन जाते हैं।

यहाँ प्रकृति और मनुष्य के बीच कोई दूरी नहीं रह जाती। श्रद्धालु जल में खड़ा होकर सूर्य को अर्घ्य देता है और उस जीवनदायी शक्ति के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है, जिसके बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना संभव नहीं है।

छठ पूजा की अनूठी विशेषता अस्ताचलगामी सूर्य की उपासना है। यह परंपरा अपने भीतर अत्यंत गहरा मानवीय दर्शन समेटे हुए है। संसार में प्रायः उगते हुए सूर्य को महत्त्व दिया जाता है, लेकिन छठ में डूबते हुए सूर्य के प्रति भी सम्मान व्यक्त करना सिखाता है। यह हमें बताता है कि जीवन की संध्या भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी उसकी सुबह।

मनुष्य के जीवन में भी सफलता और असफलता, यौवन और वृद्धावस्था, मिलन और बिछोह, सुख और दुःख—सभी का अपना स्थान है। जो समाज केवल सफलता का सम्मान करता है, वह जीवन की संपूर्णता को नहीं समझ सकता। छठ पूजा इस संकीर्ण दृष्टिकोण से ऊपर उठकर जीवन के प्रत्येक चरण के प्रति कृतज्ञता का संदेश देती है।

इस पर्व में स्त्री की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। एक व्रती महिला जब कई दिनों तक कठिन नियमों का पालन करती है, परिवार के सदस्यों के साथ पूजा की तैयारी करती है और संतान तथा परिवार के मंगल की कामना करती है, तब वह केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं कर रही होती, बल्कि अपनी सांस्कृतिक परंपरा को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का दायित्व भी निभा रही होती है।

छठ के लोक-गीतों में इस स्त्री-मन की अनगिनत अनुभूतियाँ सुरक्षित हैं। कहीं माँ की संतान के प्रति चिंता है, कहीं पति की प्रतीक्षा करती पत्नी का विरह है, कहीं मायके की स्मृति है और कहीं परिवार के सुखी भविष्य की कामना है। इन गीतों को ध्यान से सुनने पर अनुभव होता है कि लोक-साहित्य किसी समाज के मन की वह आवाज है, जिसे औपचारिक इतिहास कई बार दर्ज नहीं कर पाता।

छठ पूजा का सामाजिक पक्ष भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। इस अवसर पर गाँव और नगर के लोग मिलकर घाटों की सफाई करते हैं, प्रकाश की व्यवस्था करते हैं, पूजा सामग्री उपलब्ध कराते हैं और एक-दूसरे की सहायता करते हैं। आर्थिक और सामाजिक भिन्नताओं के बावजूद लोग एक ही घाट पर एकत्रित होते हैं। यह सामूहिकता भारतीय लोकजीवन की एक बड़ी सांस्कृतिक शक्ति है।

आज छठ पूजा बिहार की सीमाओं से निकलकर पूरे भारत और विदेशों में फैल चुकी है। प्रवासी भारतीयों के लिए यह अपनी मातृभूमि, अपनी भाषा और अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहने का माध्यम बन गई है। हजारों किलोमीटर दूर रहने वाला व्यक्ति जब छठ का गीत सुनता है अथवा अपने घर में ठेकुआ बनते देखता है, तो उसके भीतर जन्मभूमि की स्मृतियाँ जीवित हो उठती हैं।

लेकिन इस सांस्कृतिक विस्तार के साथ हमारी जिम्मेदारियाँ भी बढ़ी हैं। यदि हम सूर्य की पूजा करते हैं, तो हमें जलस्रोतों की स्वच्छता का भी ध्यान रखना चाहिए। यदि हम प्रकृति को माता मानते हैं, तो उसके संसाधनों का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। यदि हम छठी मइया से परिवार के कल्याण की प्रार्थना करते हैं, तो परिवार की महिलाओं के स्वास्थ्य और सम्मान की रक्षा भी करनी चाहिए।

छठ पूजा का वास्तविक संरक्षण केवल अनुष्ठानों को दोहराने से नहीं होगा। इसके मूल में निहित कृतज्ञता, संयम, स्वच्छता, सामाजिक सहयोग और प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व को अपने जीवन में अपनाना भी आवश्यक है।

अंततः कहा जा सकता है कि छठ पूजा भारतीय लोक-संस्कृति की एक ऐसी अमूल्य धरोहर है, जिसमें अतीत की परंपरा, वर्तमान की सामाजिक चेतना और भविष्य के लिए पर्यावरणीय संदेश एक साथ विद्यमान हैं।

छठ हमें केवल सूर्य को अर्घ्य देना नहीं सिखाता, बल्कि उस प्रकृति के प्रति सिर झुकाना सिखाता है, जिसने हमें जीवन दिया है। यह पर्व हमें बताता है कि आस्था का वास्तविक सौंदर्य केवल पूजा में नहीं, बल्कि कृतज्ञता, करुणा, अनुशासन और प्रकृति के संरक्षण में भी निहित है।

25. शोध के प्रमुख निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं—

1. छठ पूजा भारतीय सूर्योपासना की प्राचीन परंपरा और क्षेत्रीय लोक-धार्मिक मान्यताओं के दीर्घकालीन विकास का परिणाम है।

2. इस पर्व की वर्तमान चार दिवसीय अनुष्ठानिक पद्धति इसे भारतीय लोक-पर्वों में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है।

3. छठ में सूर्यदेव और छठी मइया की संयुक्त आराधना प्रकृति तथा मातृ-शक्ति के प्रति भारतीय लोकआस्था का परिचायक है।

4. अस्ताचलगामी और उदीयमान दोनों सूर्य की उपासना में जीवन के प्रत्येक चरण के प्रति सम्मान तथा कृतज्ञता का दर्शन निहित है।

5. छठ के लोक-गीत भोजपुरी, मैथिली और मगही भाषाई समुदायों की सामूहिक स्मृति, स्त्री-अनुभव और सांस्कृतिक पहचान के महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं।

6. इस पर्व में महिलाओं की भूमिका केवल धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं है। वे इसकी सांस्कृतिक निरंतरता और सामुदायिक संगठन की प्रमुख संवाहक हैं।

7. छठ पूजा कृषि, जल, वनस्पति और प्राकृतिक संसाधनों के साथ ग्रामीण समाज के ऐतिहासिक संबंध को प्रकट करती है।

8. यह पर्व पारिवारिक एकता, सामाजिक सहयोग और सामुदायिक सहभागिता को प्रोत्साहित करता है।

9. प्रवासी भारतीय समुदायों में छठ पूजा सांस्कृतिक पहचान और मातृभूमि से भावनात्मक संबंध बनाए रखने का महत्त्वपूर्ण माध्यम है।

10. पर्यावरण संरक्षण, जलस्रोतों की स्वच्छता, पारंपरिक कारीगरों और लोकगीतों के संरक्षण के माध्यम से इस पर्व की मूल भावना को और अधिक सार्थक बनाया जा सकता है।

लेखन एवं प्रकाशन संबंधी टिप्पणी- प्रस्तुत लेख एक विस्तृत साहित्य-समीक्षात्मक और सांस्कृतिक विश्लेषण है। इसमें पौराणिक मान्यताओं, ऐतिहासिक तथ्यों और आधुनिक शोध के निष्कर्षों को अलग-अलग पहचान के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। विशेष रूप से छठ की निश्चित ऐतिहासिक उत्पत्ति के संबंध में उपलब्ध प्रमाण सीमित हैं। अतः इसे किसी एक ऐतिहासिक तिथि या एक पौराणिक घटना से जोड़कर अंतिम निष्कर्ष देना उचित नहीं होगा। पुस्तक में प्रकाशन से पहले संदर्भ ग्रंथों के मूल संस्करण और शोधपत्रों की पूर्ण प्रकाशन-सूचना का सत्यापन कर लेना चाहिए।

26. संदर्भ ग्रंथ एवं शोध-सामग्री

इस विषय को शोधपरक एवं अकादमिक दृष्टि से प्रस्तुत करने के लिए निम्नलिखित मूल ग्रंथों, पुस्तकों, शोधपत्रों और संस्थागत स्रोतों का उपयोग किया जा सकता है।

(क) प्राचीन भारतीय धार्मिक एवं पौराणिक ग्रंथ

1. ऋग्वेद – सूर्य, सविता, आदित्य एवं प्राकृतिक शक्तियों से संबंधित सूक्त। विशेष रूप से मंडल 1, सूक्त 35; मंडल 1, सूक्त 50; मंडल 3, सूक्त 62।

2. वाल्मीकि रामायण – युद्धकांड, सर्ग 105-107 के आसपास आदित्यहृदय स्तोत्र का प्रसंग। विभिन्न संस्करणों में सर्ग संख्या में अंतर संभव है।

3. महाभारत – आदित्यर्ण एवं वनपर्व; कर्ण, कुंती तथा सूर्यदेव से संबंधित प्रसंग।

4. मार्कण्डेय पुराण – देवी माहात्म्य तथा देवी उपासना संबंधी प्रसंग।

5. विष्णु पुराण – सूर्यवंश और सूर्यदेव से संबंधित आख्यान।

6. मत्स्य पुराण – सूर्योपासना एवं धार्मिक अनुष्ठानों से संबंधित सामग्री।



7. भविष्य पुराण – सूर्योपासना तथा सूर्य-संबंधी धार्मिक परंपराओं का विवेचन।

8. सांब पुराण – सूर्योपासना की पौराणिक परंपरा के अध्ययन के लिए विशेष उपयोगी।

सुव्रत दे, सम्पादक ः हिन्दी-ज्योति, सम्बलपुर ,उड़ीसा
मोबाईल ः 8457032905



दीपावली का बाजार

ईरान इजराइल और यूक्रेन रूस के बीच भारी बमबारी,धमाके देखते ।अपनी दीपावली आ गई किंतु चारों देश अपनी अड़ी , अपनी झड़ी और अपनी फुलझड़ी को चकरी बनाने में ही दो साल से ज्यादा समय से भिड़े हुए हैं इन नालायकों के कारण एक अकलवर मध्यावधि चुनाव में बुरी तरह से हार गया हालांत इस तरह बिगड़ गए कि जेन झी को भी अनेक देशों में कूदना पड़ा।

पूरी दुनिया की अर्थ व्यवस्था बिगाड़ने में इन चार नाला यक देशों जो कि अपने आप को तोप समझते हैं की भूमिका अत्यंत ही धिक्कार देने की रही है।इन नालायकों के कारण हमारे देश के भी कुछ लायकवर नेता आंदोलनकारी कार्यक्रम निर्धारित करने के चक्कर में उलझ कर रह गए।सभी मंहगाई, भूख मरी, बेरोजगारी, विदेशों से वापसी, और बाजार की अनियमितता का दोषारोपण कर अपने देशों की सरकारों को आरोपी बना कर जंगी प्रदर्शन करने लगे।बांग्लो देश हो चाहे नेपाल सभी जगह था बुरा हाल।जबकि वास्तव में देखा जाये तो कुछ सनकी देशों की अड़ियल नीति , टैरिफ नीति और चारों नाला यक देशों की आपसी लड़ाई में पूरा विश्व परेशान हुआ। खाड़ी देशों से गैस, पेट्रोल, कच्चा तेल की आपूर्ति में निरंतर अनिश्चितता के फलस्वरूप अनेकों देशों की आर्थिक व्यवस्था डगमगाई तो कुछ विघ्न संतोषी तत्व सरकारों के खिलाफ ही भीड़ गए ।अच्छा हुआ कि अमेरिका में मध्यावधि अभिमत के चक्कर में ट्रम्प जैसे महत्वाकांक्षी व्यक्तित्व को मुँह की खाने के बाद वस्तु स्थिति का आभास हुआ वरना कई तो विश्व युद्ध की ओर बढ़ने के लिए मनमानी गोला बारूद इकट्ठा करने के जुगाड़ में पाकिस्तान जैसे फिसड्डी देश को अपना सूत्र धार बनाने की योजना को अमली जामा पहनाना चाह रहे थे।खैर गायक कलाकार विनोद राठौर का लाइव कार्यक्रम हमने अपने शहर में सुना तो उनका एक गाना ÷नायक नहीं खल नायक हूं मैं÷ सुनकर ट्रंप जी याद आए ।बेचारे शांति के लिए नोबल पुरस्कार प्राप्त करने में तो पिछड़ ही गए ।साथ ही महाभियोग के शिकंजे में फंसने वाले हैं।जो भी हो बुद्धिमानी और होशियारी में आज भी नरेंद्र भाई मोदी के मुकाबले में दुनिया में को दूसरा चतुर दिखाई नहीं पड़ता है।नरेंद्र भाई ने साँप भी पकड़ लिया और लाठी का गहरा असर भी दिखा दिया । भारत जैसे विविधता में एकता को प्रदर्शित करने वाले देश को जिसकी जनसंख्या करोड़ों में है संचालित करने ,प्रभावित करने में बहुत बड़े मस्तिष्क की आवश्यकता पड़ती है जो कि हमारे हिसाब से मोदी के पास है।देखते देखते हम चन्द्र यान भेजने में, डिजिटल भारत बनाने में,स्वच्छ भारत एवं स्वस्थ भारत बनाने में , आपरेशन सिंदूर करने में सफल हो गए , ब्रिक्स सम्मेलन निपटाने में अव्वल रहे इसी कारण कुछ भारत विरोधी तल मला गए हैं।इसी तलमलाहट में इस साल कई शहरों में रावण दहन में रावण स्वयं जल गया। यह सुनकर कई होशियार कहते हैं ÷ मोदी है तो मुमकिन है।,÷ इनको कौन समझाए कि देखते देखते दीपावली का मह पर्व आ गया है।मोदी जी का रॉकेट इस तरह लांच करेगा कि कइयों के

दिल के अनार फूटते फूटते रह जायेंगे।कोई अपनी फुलझड़ी जलाए या चकरी चलाए मोदी का सुतली बम जो कि आत्म निर्भर भारत के कौशल का प्रतीक है फूटकर तहलका मचाएगा ही देखते देखते दीपावली के बाजार की रौनक खुशियां बिखेर रहीं है।सोना चांदी के भाव गिर चुके हैं।शासकीय कर्मचारी मंहगाई भत्ते की किश्त पा चुके हैं, कुल मिलाकर इस वर्ष की दीपावली में बाजार में फील गुड है ।।जय राम जी की।।

डॉ प्रणय श्रीवास्तव अश्क,
9424979678